प्रातः क्लास 10/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। शिवबाबा बैठ बच्चों को समझाते हैं अर्थात् आप समान बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। जैसे मैं ज्ञान का सागर हूँ वैसे बच्चे भी बनें। यह तो मीठे बच्चे जानते हैं सभी एक समान नहीं बनेंगे। पुरुषार्थ तो हरेक को अपना-2 करना होता है। स्कूल में स्टूडेंट तो बहुत पढ़ते हैं; परन्तु सभी एक समान पास विद् ऑनर नहीं होते हैं, फिर भी टीचर पुरुषार्थ कराते हैं। तुम बच्चे भी पुरुषार्थ करते हो। बाप पूछते हैं तुम क्या बनेंगे? सभी कहेंगे हम आए ही हैं नर से ना॰, नारी से ल॰ बनने। यह तो ठीक है; परन्तु अपनी एक्टीविटी भी देखो ना। बाप भी ऊँच ते ऊँच है, टीचर भी ऊँच ते ऊँच है। कोई भी मनुष्य को बाप वा टीचर नहीं कहा जाता। यह एक बाप को ही कहा जाता है। बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। इस बाप को कोई जानते नहीं। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है; परन्तु वह जैसा है वैसा उनको जानना यह मुश्किल है। बाप को जानेंगे तो टीचरपना भूल जावेंगे, फिर गुरुपना भूल जावेंगे। रिगार्ड भी बच्चों (को) बाप का रखना है। रिगार्ड किसको कहा जाता है, बाप जो पढ़ाते हैं वह अच्छी रीत पढ़ते हैं गोया रिगार्ड रखते हैं। बाप तो बहुत मीठा है। अन्दर में बहुत खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। कापारी खुशी रहनी चाहिए। हरेक अपने से पूछे हमको ऐसी खुशी है? एक समान तो सभी की रह न सके। पढ़ाई में भी वास्ट डिफरेंट(स) है। उन स्कूलों में भी कितना फर्क रहता है। वह तो कॉमन टीचर पढ़ाते हैं। यह तो है अनकॉमन। ऐसा टीचर कोई होता नहीं। किसको यह पता ही नहीं है निराकार फादर टीचर भी बनते हैं, भल श्रीकृष्ण का नाम दिया है; परन्तु उनको पता ही नहीं है वह फादर कैसे हो सकता है। कृष्ण तो देवता है ना। यूँ तो कृष्ण नाम बहुतों का है; परन्तु कृष्ण कहने से ही श्री कृष्ण सामने आ जावेगा। वह तो देहधारी है ना। यह शरीर तो उनका नहीं है ना। खुद कहते हैं मैंने इस तन का लोन लिया है। पहले भी मनुष्य था, अभी भी मनुष्य है। यह भगवान है नहीं। वह तो एक ही निराकार है। अभी तुम बच्चों को कितनी राज़ समझाते हैं; परन्तु फिर भी फाइनल बाप समझना, टीचर समझना, गुरु समझना यह हो नहीं सकता। घड़ी-2 भूल जावेंगे। देहधारी तरफ बुद्धि चली जाती है। फाइनल बाप, बाप है, टीचर है, सद्गुरु है यह निश्चय बुद्धि अभी नहीं है। अभी तो भूल जाते हैं। स्टूडेंट कब टीचर को भूलेंगे क्या? हॉस्टल में जो रहते हैं वह टीचर को कब भूलेंगे क्या? स्टूडेंट हॉस्टल में रहे पड़े हैं तो पक्का होगा ना। यहाँ तो वह भी पक्का निश्चय नहीं है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। हॉस्टल में बैठे हैं तो ज़रूर स्टूडेंट हैं; परन्तु यह पक्का निश्चय न है। फिर भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। जानते हैं सभी अपने-2 पुरुषार्थ अनुसार पद ले रहे हैं। उस पढ़ाई में तो फिर कोई बैरिस्टर बनते हैं, इंजीनियर बनते हैं, डॉक्टर बनते हैं। यहाँ तो तुम विश्व के मालिक बन रहे हो। तो ऐसे स्टूडेंट की बुद्धि कैसी होनी चाहिए। चलन, वातावरण कैसा अच्छा होना चाहिए। बाप समझाते हैं– बच्चे, तुमको कब रोना नहीं है। तुम विश्व के मालिक बनते हो, कब या हुसैन नहीं मचानी चाहिए। या हुसैन मचाना यह है हाईएस्ट रोना। अभी तलक ऐसे भी रोते हैं। जैसे 100% तमोगुणी। जो रोते हैं उनको कहा जाता है 100% तमोगुणी। इसलिए बाप खुद कहते हैं जिन रोया तिन खोया। विश्व की ऊँच ते ऊँच बादशाही खो बैठते हैं। कहते तो हैं हम नर से ना॰ बनने आए हैं; परन्तु वह चलन कहाँ। बाप तो बहुत बड़ी मंज़िल पर ले जाते हैं। कल्प-2 बाप आकर बड़ी ते बड़ी मंज़िल पर ले जाते हैं। ऐसे नहीं यह उस मंज़िल पर पहुँचा हुआ है। नहीं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पुरुषार्थ सभी कर रहे हैं। कोई तो अच्छी रीत पास हो स्कॉलरशिप ले लेते हैं, कोई नापास हो जाते हैं। नम्बरवार तो होते ही हैं। तुम्हारे में भी कोई तो पढ़ते हैं, कोई पढ़ते भी नहीं हैं। जैसे गामरे(गांवड़े) वालों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता है। घास काटने लिए बोलो तो खुशी से जावेंगे। उसमें स्वतंत्र लाइफ समझते हैं, पढ़ना बन्धन समझते हैं। ऐसे भी बहुत होते हैं। साहुकारों में जमींदार लोग भी कोई कम नहीं होते हैं। अपन को इन डिपेन्डेन्ट बड़ा खुशी में समझते हैं। नौकरी नाम तो नहीं है ना। ऑफिस आदि में तो मुनष्य नौकरी करते हैं ना। अभी तुम बच्चों को बाप पढ़ाते हैं विश्व का मालिक

बनाने। नौकरी के लिए नहीं पढ़ाते हैं। तुम तो इस पढ़ाई से विश्व के मालिक बनने वाले हो ना। बड़ी ऊँच पढ़ाई ठहरी। स्कूल है बरोबर; परन्तु तुम कोई नौकरी करने लिए नहीं पढ़ते हो। तो तुम विश्व के मालिक स्वतंत्र बन जाते हो। बात कितनी सहज है। एक ही पढ़ाते हैं जिससे तुम इतना ऊँच महाराजा-महारानी बनते सो भी पवित्र। तुम तो कहते हो कोई भी धर्म वाला आकर पढ़े। समझेंगे यह पढ़ाई तो बहुत ऊँची है। पढ़ाई से ही विश्व के मालिक बनते हैं। यह तो बाप पढ़ाते हैं। तुम्हारी अभी कितनी विशाल बुद्धि बनी है। हद की बुद्धि से बाबा बेहद की बुद्धि में लाया है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कितनी खुशी रहती है हम भी औरों को विश्व का मालिक बनावें। वास्तव में नौकरी तो भल वहाँ भी होती है, दास-दासियाँ-नौकर आदि तो चाहिए ना। पढ़े आगे अनपढ़े भरी ढोवेंगे; इसलिए बाप कहते हैं अच्छी रीत पढ़ो तो तुम यह बन सकते हो; परन्तु पढ़ेंगे नहीं तो क्या बनेंगे। न पढ़ते हैं तो फिर बाप को इतना रिगार्ड से याद भी नहीं करते हैं। बाप कहते हैं जितना तुम याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम यह बनेंगे। कहेंगे– बाबा, जैसे आप चलाओ। बाप भी मत तो इन द्वारा ही देंगे ना; परन्तु इनकी मत भी लेते नहीं है, फिर भी पुरानी सड़ी हुई मनुष्य मत पर चलते हैं। देखते भी हैं शिवबाबा इस रथ में आकर मत देते हैं फिर भी अपनी मत पर चलते हैं। जिसको पाई पैसे की मत पर चलते हैं। रावण के मत पर चलते-2 इस समय कौड़ी मिसल बन गए हैं। अभी राम शिवबाबा मत देते हैं। निश्चय में ही विजय है। इसमें कब नुकसान नहीं होगा। नुकसान को भी बाप फायदा करा देंगे; परन्तु निश्चय बुद्धि वालों को। संशय बुद्धि वाले और ही घुटका खाते रहेंगे। निश्चय बुद्धि वाले कब घुटका नहीं खावेंगे। समझेंगे, शिवबाबा इस रथ पर बैठा है, वह मत दे रहे हैं। पक्के निश्चय बुद्धि वाले ..... कब घाटा पड़ न सके। बाबा खुद गैरन्टी करते हैं। कई बच्चे मुँझते हैं पता नहीं यह मत इनकी है वा शिवबाबा की। यह तो कहते हैं हमेशा शिवबाबा की ही मत समझो। फिर भी कहे, मुझे यह मत पसन्द नहीं है तो अपनी मत पसंद है। मनुष्य मत को देहधारी की मत कहा जाता है। देही-अभिमानी की मत आधा कल्प थी। वहाँ दुख की बात नहीं होती। यहाँ तो है मनुष्य मत। गाया भी जाता है मनुष्य मत, ईश्वरीय मत, दैवी मत। अभी तुम समझते हो ईश्वरीयमत हमको मिलती है, जिस ईश्वर की श्रीमत से तुम मनुष्य से देवता बनते हो। फिर वहाँ स्वर्ग में तो सुख ही पाते हो, कोई दुख की बात नहीं। वह सभी स्थायी सुख रह जाता है। इस समय तुमको फीलिंग में लाना होता है। भविष्य की फीलिंग आती है। अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग, जबकि श्रीमत मिलती है। बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। उसको तुम ही जानते हो। उनके मत पर चलते हो। बाप कहते हैं बच्चे गृहस्थ व्यवहार में भल रहो। कौन कहता है तुम कपड़ आदि बदली करो? भल कुछ भी पहनो, बहुतों से कनेक्शन में आना पड़ता है। रंगीन कपड़ों के लिए मना नहीं करते हैं। कोई भी कपड़ा पहनो, इनसे तुम्हारा कोई ताल्लुक नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं देह सहित देह के सभी संबंध छोड़ो।..... बाकी पहनो भल कुछ (भी)। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ यह पक्का निश्चय करो। यह भी जानते हो आत्मा ही पतित और पावन बनती है। कहेंगे– पतित आत्मा है, यह पावन आत्मा है। महात्मा को भी महान आत्मा कहेंगे ना। महान परमात्मा कब नहीं कहेंगे। खुद भी कहते हैं महान आत्मा। महान परमात्मा अक्षर तो कब सुना न होगा; परन्तु इतने तमोप्रधान बुद्धि मनुष्य हैं जो इतनी बातों को समझते ही नहीं हैं। महान परमात्मा कहना तो शोभता नहीं। पुण्य परमात्मा कब नहीं कहते। इतनी सहज बात भी जब कोई समझावे। तुम यह कह कैसे सकते कि ईश्वर सर्वव्यापी है। खुद कहते हो पापात्मा, पुण्यात्मा। तो परमात्मा तो अलग हुआ ना। कितनी अच्छी बातें हैं समझने की। सद्गुरु, सर्व की सद्गति देने वाला तो एक ही बाप है। वहाँ कब अकाले मृत्यु होती नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो बाबा हमको फिर से ऐसा देवता बनाते हैं। आगे यह बुद्धि में नहीं था। कल्प की आयु कितनी है यह भी नहीं जानते थे। अभी तो सारी स्मृति आई है। यह भी बच्चे समझते हैं आत्मा को

पापात्मा और पुण्यात्मा कहा जाता है। पाप परमात्मा तो कब नहीं कहा जाता। फिर कोई कहे, परमात्मा सर्वव्यापी है तो यह कितनी बेसमझ है। यह बाप ही बैठ समझाते हैं। अभी तुम समझते हो हर 5000 वर्ष बाद बाप आकर पापात्माओं को पुण्यात्मा बनाते हैं। एक को नहीं, सभी बच्चों को बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम बच्चों को बनाने वाला मैं ही बेहद का बाप हूँ। ज़रूर बच्चों को बेहद का सुख दूँगा। सतयुग में होते ही हैं पवित्र आत्माएँ। रावण पर जीत पाने से ही तुम पुण्यात्मा बन जाते हो। तुम फील करते हो माया कितनी विघ्न डालती है। एकदम नाक में दम कर देती है। तुम समझते हो, माया से युद्ध कैसे चलती है। उन्होंने फिर पाण्डवों और कौरवों की युद्ध दिखाई है। लश्कर आदि क्या-2 बैठ दिखाते हैं। इस युद्ध का किसको भी पता नहीं है। यह है गुप्त। इनको तुम्हीं अब जानते हो। माया से हम आत्माओं को युद्ध करनी है। बाप कहते हैं सबसे (ब)ड़ा दुश्मन तुम्हारा है ही काम। योगबल से तुम इस पर जीत पाते हो। योगबल का अर्थ भी कोई नहीं समझते। जो बिल्कुल सतोप्रधान थे वही फिर बिल्कुल तमोप्रधान बने हैं। बाप खुद कहते हैं बहुत जन्मों के अन्त में मैं प्रवेश करता हूँ। वही तमोप्रधान बना है। तत त्वम्। बाबा एक को थोड़े ही कहेंगे। नम्बरवार सभी को कहते हैं। नम्बरवार कौन-2 हैं यहाँ तुमको पता पड़ता है। आगे तुमको बहुत पता पड़ेगा। माला का तुमको साक्षात्कार करावेंगे। स्कूल में जब ट्रान्सफर होते हैं तो सभी को मालूम पड़ जाता है ना। रिज़ल्ट सारी निकल जाती है। बाबा ने बच्ची से पूछा– तुम्हारे पेपर कहाँ से आते हैं? बोली– लण्डन से। अब तुम्हारे पेपर कहाँ से निकलेंगे? ऊपर से। तुम्हारा पेपर ऊपर से आवेगा। सभी सा॰ करेंगे। कैसी वण्डरफुल पढ़ाई है, कौन पढ़ाते हैं, किसको पता नहीं हैं। कृष्ण भगवानुवाच कह देते हैं। पढ़ाई में सभी नम्बरवार हैं तो खुशी भी नम्बरवार होगी। यह जो गायन है अतिइन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो, यह पिछाड़ी की बात है। बाप ने समझाया है भल बाबा जानते हैं यह बच्चे कब गिरने वाले नहीं हैं; परन्तु फिर पता नहीं क्या हुआ है। पढ़ाई ही नहीं पढ़ते हैं। तकदीर में नहीं है। थोड़ा ही उनको कहा जाए जाकर अपना घर बसाओ उस दुनिया में, तो झट चले जावेंगे। कहाँ से निकल कहाँ चले जाते हैं। उनकी चलन, बोलना करना ही ऐसा होता है, समझते हैं हमको अगर इतना मिले तो हम जाकर अलग रहे। चलन से ही समझा जाता है। बाप कोई अन्तर्यामी नहीं है, उनकी चलन से ही समझा जाता है। इसका मतलब निश्चय नहीं है। लाचारी बैठे हैं। बहुत हैं जो ज्ञान को रिंचक भी नहीं जानते, कब बैठते भी नहीं। माया पढ़ने ही नहीं देती है। ऐसे सभी सेन्टर्स पर होते हैं। कब पढ़ने आवेंगे ही नहीं। वण्डर है ना! कितनी ऊँची नॉलेज है, भगवान पढ़ाते हैं, कुछ तो वचन सुनो ना। बिल्कुल ही नहीं आवेंगे। बाबा कहे–यह काम न करो, मानेंगे नहीं। ज़रूर उल्टा काम करके दिखावेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है उसमें तो हर प्रकार की चाहिए ना। ऊपर से लेकर नीचे तक सभी बनने हैं। मर्तबे में फर्क तो रहता है ना। यहाँ भी नम्बरवार मर्तबे हैं। सिर्फ फर्क क्या है– वहाँ आयु बड़ी और सुख रहता है, यहाँ आयु छोटी और दुख है। बच्चों की बुद्धि में यह वण्डर बातें हैं, कैसा यह ड्रामा बना हुआ है, फिर कल्प-2 हम वही पार्ट बजावेंगे, कल्प-कल्प बजाते रहते हैं। इतनी छोटी आत्मा में कितना पार्ट भरा रहता है। वही फीचर्स, वही एक्टीविटी। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। बनी बनाई बन रही..... यह चक्र फिर भी रिपीट होगा। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में आवेंगे। यह ड्रामा का चक्र फिर भी फिरता रहता है हूबहू। इसमें मूँझने की तो बात ही नहीं। अच्छा, अपन को आत्मा समझते हो? आत्मा का बाप शिवबाबा है, यह तो समझते हो ना। जो सतोप्रधान बनते हैं वही फिर तमोप्रधान बनते हैं। 84 जन्म भी मानते हो, फिर सतोप्रधान बनने से ही तुम वह देवी-देवता बनेंगे। बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। यह तो अच्छा है ना। बस, यहाँ तब ही ठहरा देना चाहिए। बोलो, बेहद का बाप यह स्वर्ग का वर्सा देते हैं, वही पतित-पावन है। बाप नॉलेज देते हैं। इसमें शास्त्र आदि की तो बात ही नहीं। शास्त्र शुरू में कहाँ से आवेंगे। यह तो जब बहुत हो जाते हैं तब बाद में शास्त्र बनाते हैं। सतयुग में शास्त्र होते ही नहीं। परम्परा तो कोई चीज़ होती नहीं। नाम-रूप तो बदल जावेगा। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। नमस्ते।